© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

भारत -चीन संबंधो का विश्लेषणात्मक अध्यन: मध्यकालीन इतिहास के विशेष सम्बन्ध में

श्रीमती अनुबाला* डॉ.शीश राम बोयट (एसोसिएट प्रोफेसर)
ओ.पी.जे.एस. विश्वविधयलय

चीन और भारत के संबंध बहुत पुराने हैंदोनों देशों के . राजनीतिक रिश्तों में भले ही उतार चढ़ाव आए हों, लेकिन सांस्कृतिक और धार्मिक आदानप्रदान का सिलसिला बहुत ही - .पुराना है लगभग 2000 वर्ष पहले बौद्ध धर्म और दर्शन चीन में भारत से आया. चीन में बौद्ध धर्म भारत से ही आयाआज भी चीन में बौद्ध धर्म . काप्रभावहैमहात्मा गांधी., रवीन्द्रनाथ टैगोर जवाहरलाल नेहरू जैसे लोगों ने बीसवीं सदी में जापान के विरुद्ध चीनी संघर्ष का समर्थन किया.चीनी लोग ये कभी भूल नहीं सकते .

प्रोफ़ेसर ल्यु के विचारों का आधार चीन की युवा पीढ़ी में भी नज़र आता हैबीजिंग की एक . कॉलेज की छात्रा ल्यु मिंग ने रवीन्द्रनाथ को पढ़ा है. चीन का भी भारत पर प्रभाव हैमसलन . केरल राज्य में .सफेद शक्कर को भारत में चीनी कहा जाता है और मूँगफली को चीनिया बादाम .ज भी मछली पकड़ने के चीनी जाल मौजूद हैंआ

आज़ादी के बाद भारत दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र कहलाया जबकि चीन ने समाजवाद की राह पकड़ीलेकिन चीन में जनतंत्र के न होने के आरोप पर चीनी लोग बचाव की मुद्रा अपना . फ़ेसर लुन शी हाइ कहते हैंबीजिंग एशिया प्रशांत संस्थान के उपनिदेशक प्रो.लेते हैं, 'जनतंत्र की इच्छा तो पूरी मानव जाति में मौजूद है चीन में भले ही देर से .मगर लोकतांत्रिक व्यवस्था

ज़रूर आएगी. 'चीन में भारत या पश्चिमी देशों की तरह बहुदलीय व्यवस्था नहीं है, किंतु चीन में अपनी तरकीअलग व्यवस्था है जिसमें अन्य पार्टियाँ सत्ताधारी कम्युनिस्ट पार्टी को सलाह देती हैं.

भारत एवं चीन दोनों देष विगत अनेक षताब्दियों से षान्ति के पोशक है । इनके सम्बन्धों का विष्लेशणात्मक अध्ययन यह स्पश्ट करता है कि दोनों देषों के बीच सम्बन्धों का स्वरूप कभी भी स्थायी नहीं रहा । इनकी संस्कृति एवं सभ्यताऐं अत्यधिक प्राचीन हैं । भूगोल ने इन दोनों देषों को एक दूसरे के समीप लाने का कार्य किया है । स्वतंत्रता के पूर्व दोनों देषों के सम्बन्ध मुख्यतः भारत की कला, संस्कृति एंव धर्म आदि क्षेत्रों तक सीमित थे । 17 वीं षताब्दी मे जब बौद्ध धर्म अपनी चरम सीमा पर था, पूर्वी एवं पष्चिमी षासकों ने दोनों देषों के बीच अपने –अपने राजदूतों का आदान प्रदान किया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् भारत ने चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की चेश्टा की थी । दोनों देषों के बीच हुई सन्धियाँ, सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं प्रधान मन्त्रियों, राजनायिकों के आवागमन ने भारत –चीन सम्बन्धों को स्थिरता प्रदान की । भारत ने चीन की अर्न्तराश्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, परन्तु मित्रता एवं विष्वास के इस वातावरण के पीछे चीन अपनी महत्वाकांक्षाओं को मूर्त रूप देने का प्रयास कर रहा था । 1973 में चीन –जापन युद्ध के समय इण्डिया नेषनल कांग्रेस ने चीन को अपना पूर्ण समर्थन दिया तथा सहायता के लिए एक मेडिकल टीम भेजी । इधर चीन भारत को कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों को मिलाकर एक वृहद चीन की स्थापना करना चाहता था, साथ ही एषिया में नेतृत्व प्राप्त करने की दषा में वह भारत को अपना प्रतिद्वन्दी मानता था ।

वस्तुत स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् से ही भारत एवं चीन की राजनीतिक अर्न्तराश्ट्रीय भौगौलिक और सांस्कृतिक स्थिति इस प्रकार की रही कि उसका सहज स्वरूप और सम्बन्धों के विष्वास की तार्किक परिणति एक दूसरे को प्रतिद्वन्दी और विरोधी के रूप में उभरने के लिए बाध्य किया । भौगौलिक दृश्टि से भारत और चीन की सीमा विष्व की सबसे लम्बी सीमाओं में से एक और विवादास्पद है । भौगोलिक अस्पश्टता ही भारत चीन विवाद का कारण माना जाता है वैसे भी दो बड़े राश्ट्रों के मध्य किसी मध्यस्थ राश्ट्र का अभाव स्थित को तनावपूर्ण बनाता है । तिब्बत की मध्यस्थ राश्ट्र की स्थिति समाप्त करने का दुश्परिणाम भारत को भुगतना पड़ा । फलतः भारत के साथ उसने सीमा विवाद खड़ा किया । इस सीमा विवाद की अन्तिम परिणति 1962 में दोनों देषों के बीचयुद्ध के रूप में हुई । इस युद्ध में भारत की पराजय के साथ अर्न्तराश्ट्रीय जगत में उसकी छवि धूमिल हुई ।

21 अक्टूबर 1962 नेहरू युग की दूसरी दिषा प्रदान करने वाला दिन था । इसी दिन चीन ने भारत पर आक्रमण किया हमारी सेनायें नेफा में पराजित हुई और स्वतंत्रता के पष्चात् पहली बार राश्ट्र में सम्मान एवं गरिमा को सर्वाधिक अपमान का सामना करना पड़ा । इसका प्रधान कारण भारत द्वारा अर्न्तराश्ट्रीय जगत की वास्तविकताओं को अस्वीकार करना था ।

अन्तर्राश्ट्रीय जगत में भारत की भूमिका, तथा विष्व के अन्य देषों एवं विचारकों का भारत के प्रति दृश्टिकोण ने, भारत के प्रमुख प्रतिद्वन्दी चीन के लिए सहज ही ईर्श्या के कारण प्रदान किया जिसके परिणाम स्वरूप मित्रता के सूत्र बिखर गये और वास्तविकता के स्वर अर्न्तनिहित हो गये ।

यह बेहद महत्वपूर्ण बात है कि भारत पाकिस्तान के बीच उत्पन्न तनाव के मौजूदा दौर में सामाजिक दृश्टि से पाक के करीब माना जाने वाला देष चीन के प्रधान मंत्री झू रोंगजी ने भारत के प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी को स्पश्ट भरोसा दिलाया कि चीन भारत को खतरा नहीं समझता है और वह मानता है कि भारत भी अपने लिए चीन को खतरा नही मानेगा । साथ ही चीनी प्रधानमंत्री ने कभी भी किसी

के भी खिलाफ आतंकवाद का विरोध किया । दोनों देषों के बीच अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर हुई आपसी सहमति से निसन्देह सम्बन्धों में सुधार आने की उम्मीद है ।

आज अन्तर्राश्ट्रीय परिदृष्य तेजी से बदल रहा है । बोस्निया और कोसोवो संघर्श में नाटो की भूमिका चेचन्या, अफगानिस्तान और वोस्निया के बाद कषमीर में इस्लामी कट्टरवाद का उदय एवं उसका पाकिस्तान द्वारा समर्थन मानवधिकार के नाम पर भारत और चीन के प्रति पष्चिमी समाज की भूमिका, अन्तर्राश्ट्रीय मुद्राकोश की दादागिरी ऐसे सवाल हैं, जो भारत और चीन दोनों के लिए समान रूप से विचारणीय हैं । जनवरी 1999 में तत्कालीन रूसी प्रधानमंत्री प्रिमाकोव का रूस–चीन–भारत का सामरिक त्रिकोण बनाने का सुझाव सामयिक है । फारमोसा यानी ताइवान की समस्या और पष्चिमी सिक्यांग प्रदेष में मुस्लिम कट्टरता चीन को भारत के करीब लाने में सहायक रही है । अमेरिका का बढ़ता आतंक और सोवियत संघ का पतन चीन के लिए नई जिम्मेवारी उठाने की प्रेरणा देता है । कारगिल संकट पर चीनी कूटनीति का यही रहस्य है । अन्त में चीनी नेता तेंग–षयाओं–किंग का यह कथन उद्वत करना आवष्यक जान पड़ता है कि ‘‘जब तक चीन और भारत विकसित नहीं होते, तब तक एषियाई सदी नहीं आ सकती’’ ।

संदर्भ:

1. टायन्वीः आर.ः सिविलाइजेषन आफ ट्रायल, पृश्ठ 221
2. हार्टमैन, : दि रिलेसन्स आफ दी नेषन, पृश्ठ 71
3. कुलदीप, ना0 : विटवीन दि लाइन्स, पृश्ठ 221–22
4. षर्मा, श्री रामः इन्डियन फारेन पालिसी एनुअल सर्वे 1973, पृश्ठ 231
5. कौला, ले0 जनरल, बी.एम0 : कनफर्टेषन विथ पाकिस्तान , पृश्ठ 238
6. फड़िया, डा0 बी0एल0 : अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति, 1995, पृश्ठ 391
7. सिविल सर्विसेज, कॉनिकल, मार्च 2002,पृश्ठ 13
8. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, सितम्बर 1999, पृश्ठ 24

❖